❍ 01 / 07 / 22 की मुरली से चार्ट ❍
⇛ TOTAL MARKS:- 100 ⇚

∫∫ 1 ∫∫ होमवर्क (Marks: 5∗4=20)

➢➢ ∗कोई भी भूल कर छिपाई तो नहीं ?∗

➢➢ ∗किसी ही श्रीमत का उल्लंघन तो नहीं किया ?∗

➢➢ ∗अपने चेहरे और चलन से सत्यता की सभ्यता का अनुभव करवाया ?∗

➢➢ ∗नम्रता को अपना कवच बनाया ?∗

────────────────────────

⋆˚˚ ••☆••✧˚˚ ••☆••✧˚˚ ••☆••✧˚˚
☆ ∗अव्यक्त पालना का रिटर्न∗ ☆
❂ ∗तपस्वी जीवन∗ ❂
⋆˚˚ ••☆••✧˚˚ ••☆••✧˚˚ ••☆••✧˚˚

〰✧ ∗अब अपनी उड़ती कला द्वारा फरिश्ता बन चारों ओर चक्कर लगाओ और जिसको शान्ति चाहिए, खुशी चाहिए, सन्तुष्टता चाहिए, फरिश्ते रूप में उन्हें अनुभूति कराओ।∗ वह अनुभव करें कि इन फरिश्तों द्वारा शान्ति, शक्ति, खुशी मिल गई।

⋆˚˚ ••☆••✧˚˚ ••☆••✧˚˚ ••☆••✧˚˚

∫∫ 2 ∫∫ तपस्वी जीवन (Marks:- 10)

>> *इन शिक्षाओं को अमल में लाकर बापदादा की अव्यक्त पालना का रिटर्न दिया ?*

✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° °

✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° °

☆ *अव्यक्त बापदादा द्वारा दिए गए* ☆

❂ *श्रेष्ठ स्वमान* ❂

✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° °

✺ *"मैं अपनी शक्तिशाली वृत्ति से वायुमण्डल को परिवर्तन करने वाली विश्व-परिवर्तक आत्मा हूँ"*

~✧ सदा अपनी शक्तिशाली वृत्ति से वायुमण्डल को परिवर्तन करने वाली विश्व-परिवर्तक आत्माएं हो ना। इस ब्राह्मण जीवन का विशेष आक्यूपेशन क्या है? अपनी वृत्ति से, वाणी से और कर्म से विश्व-परिवर्तन करना। तो सभी ऐसी सेवा करते हो? या टाइम नहीं मिलता है? *वाणी के लिए समय नहीं है तो वृत्ति से, मन्सा-सेवा से परिवर्तन करने का समय तो है ना। सेवाधारी आत्माएं सेवा के बिना रह नहीं सकती। ब्राह्मण जन्म है ही सेवा के लिए। और जितना सेवा में बिजी रहेंगे उतना ही सहज मायाजीत बनेंगे। तो सेवा का फल भी मिल जाये और मायाजीत भी सहज बन जायें-डबल फायदा है ना।*

~✧ *जरा भी बुद्धि को फुर्सत मिले तो सेवा में जुट जाओ। सेवा के सिवाए समय गँवाना नहीं है। निरन्तर योगी, निरन्तर सेवाधारी बनो-चाहे संकल्प से करो, चाहे वाणी से, चाहे कर्म से। अपने सम्पर्क से भी सेवा कर सकते हो। चलो, मन्सा-सेवा करना नहीं आवे लेकिन अपने सम्पर्क से, अपनी चलन से भी सेवा कर सकते हो। यह तो सहज है ना।* तो चेक करो कि सदा सेवाधारी हैं वा कभी-कभी के सेवाधारी हैं? अगर कभी-कभी के सेवाधारी होंगे तो राज्य-भाग्य भी कभी-कभी मिलेगा।

~✧ इस समय की सेवा भविष्य प्राप्ति का आधार है। कभी भी कोई यह

बहाना नहीं दे सकते कि चाहते थे लेकिन समय नहीं है। कोई कहते हैं-शरीर नहीं चलता है, टांगें नहीं चलती हैं, क्या करें? कोई कहती हैं-कमर नहीं चलती, कोई कहती हैं-टांगे नहीं चलती। लेकिन बुद्धि तो चलती है ना! तो बुद्धि द्वारा सेवा करो। आराम से पलंग पर बैठकर सेवा करो। अगर कमर टेढ़ी है तो लेट जाओ लेकिन सेवा में बिजी रहो। *बिजी रहना ही सहज पुरुषार्थ है। मेहनत नहीं करनी पड़ेगी। बार-बार माया आवे और भगाओ-तो मेहनत होती है, युद्ध होती है। बिजी रहने वाले युद्ध से छूट जाते हैं। बिजी रहेंगे तो माया की हिम्मत नहीं होगी आने की और जितना अपने को बिजी रखेंगे उतना ही आपकी वृत्ति से वायुमण्डल परिवर्तन होता रहेगा।*

⊹˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 3 ∬ स्वमान का अभ्यास (Marks:- 10)

➢➢ *इस स्वमान का विशेष रूप से अभ्यास किया ?*

⊹˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

———————————————————

⊹˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

❂ *रूहानी ड्रिल प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा की प्रेरणाएं* ☆

⊹˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ जैसे साइन्स के साधन एरोप्लेन जब उडते हैं तो पहले चेकिंग होती है फिर माल भरना होता है। जो भी उसमें चाहिए - जैसे पेट्रोल चाहिए, हवा चाहिए, खाना चाहिए, जो भी चाहिए, उसके बाद धरती को छोडना होता है फिर उडना होता है। *ब्राह्मण आत्मा रूपी विमान भी अपने स्थान पर तो आ ही गये।* लेकिन जो डायरेक्शन था अथवा है एक सेकण्ड में उडने का, उसमें *कोई चेकिंग करने में रह गये। मैं आत्मा हूँ शरीर नहीं हूँ - इसी चेकिंग में रह गये और कोई ज्ञान के मनन द्वारा स्वयं को शक्तियों से सम्पन्न बनाने में रह गये।*

~✧ मैं मास्टर ज्ञान स्वरूप हूँ मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ - इस शुद्ध संकल्प तक रहे, लेकिन स्वरूप नहीं बन पाये। *तो दूसरी स्टेज भरने तक रह गये और कोई भरने में बिजी होने के कारण उडने से रह गये।* क्योंकि शुद्ध संकल्प में तो रमण कर रहे थे लेकिन यह देह रूपी धरती को छोड नहीं सकते थे। अशरीरी स्टेज पर स्थित नहीं हो पाते थे। बहुत चुने हुए थोडे से बाप के डायरेक्शन प्रमाण सेकण्ड में उडकर सूक्ष्मवतन या मूलवतन में पहुँचे।

~✧ जैसे बाप प्रवेश होते हैं और चले जाते हैं, तो जैेसे परमात्मा प्रवेश होने योग्य हैं वैसे मरजीवा जन्मधारी ब्राह्मण आत्मायें अर्थात महान आत्मायें भी प्रवेश होने योग्य हैं। स्वतन्त्र हो। तीनों लोकों के मालिक हो। *इस समय त्रिलोकीनाथ हो। तो नाथ अपने स्थान पर जब चाहें तब जा सकते हैं।*

✧°° ••☆••✧°° ••☆••✧°° ••☆••✧°°

∬ 4 ∬ रूहानी ड्रिल (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर रूहानी ड्रिल का अभ्यास किया ?*

✧°° ••☆••✧°° ••☆••✧°° ••☆••✧°°

────────────────────────

✧°° ••☆••✧°° ••☆••✧°° ••☆••✧°°

❂ *अशरीरी स्थिति प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा के इशारे* ☆

✧°° ••☆••✧°° ••☆••✧°° ••☆••✧°°

~✧ *याद में निरन्तर रहने का सहज साधन है - 'प्रवृत्ति में रहते पर-वृत्ति में रहना'। पर-वृत्ति अर्थात् आत्मिक रूप।* ऐसे आत्मिक रूप में रहने वाला सदा न्यारा और बाप का प्यारा होगा। *कुछ भी करेगा लेकिन ऐसे महसूस होगा जैसे काम नहीं किया है लेकिन खेल किया है।* खेल में मज़ा आता है ना, इसलिए सहज लगता है। *तो प्रवृत्ति में रहते खेल कर रहे हो, बन्धन में नहीं। स्नेह

और सहज योग के साथ-साथ शक्ति की और एडीशन करो तो तीनों के बैलेन्स से हाईजम्प लगा लेंगे।*

.˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∫∫ 5 ∫∫ अशरीरी स्थिति (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर अशरीरी अवस्था का अनुभव किया ?*

.˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∫∫ 6 ∫∫ बाबा से रूहरिहान (Marks:-10)
(आज की मुरली के सार पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- मास्टर प्यार का सागर बनना"*

➳ _ ➳ इस विश्व धरा के वरदानी स्थल... मधुबन में तपस्या धाम में मीठे बाबा की यादो में खोयी खोयी सी हूँ... मै आत्मा मीठे बाबा की शक्तिशाली तरंगो को महसूस कर रही हूँ... और *दिल की सच्ची पुकार ने बाबा को मेरे सम्मुख प्रकट कर दिया है.*.. मीठे बाबा को कहती हूँ :- " बाबा मेरे जज्बातों को अपने दिल में समाकर आपने मुझ आत्मा कितना अमूल्य अनोखा बना दिया है... मनुष्य प्रेम में निस्तेज हो गयी मै आत्मा... आज ईश्वरीय दिल में धड़क रही हूँ...

❉ *प्यारे बाबा आप समान प्यार का सागर बनाते हुए बोले :-* "मीठे प्यारे फूल बच्चे... प्यार के सागर बाबा से मिलकर मा प्यार का सागर बन.., इस धरा पर प्रेम की तरंगो को फैलाओ... *हर दिल को सच्चे प्यार का अहसास कराकर... ईश्वरीय यादो का सुख दिलाओ.*.. श्रीमत को थाम कर बहुत ही स्नेह और मिठास भरी खुशबु विश्व में फैलाओ..."

➳ _ ➳ *मै आत्मा मीठे बाबा से मिलकर प्रेम गंगा बन इस विश्व धरा पर बह रही हूँ और मीठे बाबा से कहती हूँ :-* "मेरे प्यारे प्यारे बाबा... आपने ही तो मुझ आत्मा को सच्चे प्रेम का पर्याय बनाया है... *आपके स्नेह तले मै आत्मा अथाह खुशियो में जीती जा रही हूँ..*. और सबको स्नेह से सींच रही हूँ..."

❉ *मीठे बाबा मुझ आत्मा को सुखो के अम्बार पर बैठाते हुए हीरो सा सजाते हुए बोले :-* "मीठे लाडले बच्चे... आप महान भाग्यशाली आत्माओ ने भगवान को जाना है... और उसके प्यार में फल फूल रहे हो, जबकि सारी दुनिया सच्चे प्यार की बून्द मात्र को भी तरस रही है...ऐसे में ईश्वरीय प्यार की फुहार हर तपते मन पर डाल कर शीतल राहत दे आओ... *प्रेम सुधा बनकर हर दिल को सिक्त कर आओ*..."

➳ _ ➳ *मै आत्मा ईश्वरीय पालना और प्रेम की अधिकारी बनकर मुस्करा कर मीठे बाबा से कह रही :-* "मीठे मनमीत बाबा... *आपने मुझ आत्मा को प्रेम की बदली बनाकर दुखो की तपिश पर बरसाया है*... ईश्वरीय प्रेम की हर आत्मा प्यासी है, और मै आत्मा स्नेह की दौलत लुटाकर सबको असीम सुख दे रही हूँ..."

❉ *मीठे बाबा मुझ आत्मा को विश्व कल्याणकारी और मा प्यारसागर की नजरो से देखते हुए बोले :-* "मीठे मीठे बच्चे... ईश्वरीय गोद में खिलकर जो गुणो की खुशबु से महके हो और ज्ञान रत्नों से लबालब हुए हो... *यह अनोखी खुशनसीबी हर मन के आँगन में भी बिखेरते चलो.*.. अपनी हर अदा, स्नेह भरी नजरो में ईश्वर पिता की झलक दिखाओ..."

➳ _ ➳ *मै आत्मा मीठे बाबा से बड़े प्यार से कहती हूँ :-* "मीठे लाडले बाबा मेरे... *आपने अथाह प्रेम देकर मुझ आत्मा को रोम रोम से तृप्त किया है*... सच्चे स्नेह को देकर मेरी जनमो की प्यास बुझाई है... और आपसे पाया यही सुख में सब पर दिल खोल कर लुटा रही हूँ... और अपनी चलन से पिता का नाम बाला कर रही हूँ..." इन मीठे वादों और दिली जज्बातों की बयानगी मीठे बाबा से कर... मै आत्मा साकार वतन में आ गयी...

∬ 7 ∬ योग अभ्यास (Marks:-10)
(आज की मुरली की मुख्य धारणा पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- माया की ग्रहचारी से बचने के लिए सच्चे बाप से सदा सच्चे रहना है*"

➳ _ ➳ देख रही हूं मैं स्वयं को एक सुंदर से फूलो के बगीचे में एक छोटे से, नन्हे से इनोसेंट बालक के रूप में जो इस बात से बिल्कुल अनजान है कि माया क्या है! माया की गृहचारी क्या होती है। *यही जानने की उत्सुकता से मैं नन्हा सा बालक अपने शिव पिता को बुलाता हूँ और मेरी पुकार सुनते ही मेरे पिता मेरे पालनहार शिव बाबा अपने लाइट माइट स्वरूप में मेरे सामने उपस्थित हो जाते है*। उन्हें अपने सामने देखते ही मेरा उदास चेहरा एक दम फूल के समान खिल उठता है और मैं दौड़ कर उनके पास पहुंच जाता हूँ। *बाबा मुझे अपनी गोद मे ले लेते हैं और मुझे बड़े प्यार से दुलारते हुए कहते हैं, आओ मेरे मीेठे लाडले बच्चे:- "मैं तुमको बताता हूँ कि माया की ग्रहचारी क्या होती है"*।

➳ _ ➳ अपने शिव पिता की गोद में मैं नन्हा बालक स्वयं को एकदम सुरक्षित अनुभव करते हुए बिना किसी भय के ऊंचे ऊंचे पहाड़ों, नदियों, समुन्द्र के ऊपर से उड़ता हुआ जा रहा हूँ। प्रकृति के खूबसूरत नजरों को देखता हुआ, उनका आनन्द लेता हुआ अब मैं बाबा के साथ एक ऐसे स्थान पर पहुंचता हूँ जो देखने में बहुत ही आकर्षक है। ऐशो आराम की हर भौतिक सुख सुविधाएं यहां उपस्थित हैं। *हर वस्तु देखने मे इतनी लुभायमान है कि कोई भी उनके आकर्षण में आकर्षित हुए बिना नही रह सकता*। इन सभी लुभावनी चीजों को देखते हुए मैं जैसे ही बाबा की ओर प्रश्नचित निगाहों से देखता हूँ। बाबा मुस्कराते हुए मेरी ओर देख कर मुझे जवाब देते हैं, मेरे बच्चे:- "यही तो माया की नगरी है"।

➺ _ ➺ बाबा अब मेरा हाथ थामे मुझे उस माया नगरी के अंदर ले आते हैं। मन को चकाचौंध कर देने वाले लुभावने दृश्य मैं देख रहा हूँ। लेकिन तभी मेरी निगाह एक बहुत ही खूबसूरत दिखाई देने वाले राजसिहांसन पर जाती है जिस पर एक विशाल दैत्य बैठा हुआ है। उसे देख, डर कर मैं बाबा की गोद मे छिप जाता हूँ। *बाबा कहते, बच्चे:- "यह माया रावण है, किन्तु यह आपका कुछ नही बिगाड़ सकता क्योंकि मैं आपके साथ हूँ"। मैं देख रहा हूँ उसका रूप घड़ी घड़ी बदलता हुआ दिखाई दे रहा है*। कभी बहुत ही आकर्षक और कभी भयानक। भयंकर अट्ठहास करता हुआ वो विशालकाय दैत्य अपने सैनिकों को आदेश दे रहा है कि भू लोक के हर मनुष्य को अपने मोह जाल में फंसा कर मेरे पास ले कर आओ। उसका आदेश सुन कर सैनिक जाते है और एक एक करके भू लोक के वासियों को वहां ला रहें हैं। अपने राज्य को बढ़ता देख वो दैत्य और भी भयानक अट्ठहास करता है।

➺ _ ➺ इन सभी दृश्यों के बीच एक और बहुत ही खूबसूरत दृश्य अब मैं देख रहा हूँ। *श्वेत वस्त्र धारण किये अनेक ब्राह्मण बच्चो को जो भगवान की सच्ची अराधना कर रहें हैं*। सच्चे मन से बाबा को याद करते हुए बाबा की छत्रछाया के नीचे गहन तपस्या में मग्न है। माया रावण के सैनिक उनके पास जा कर अनेक प्रकार के प्रलोभन उन्हें दे कर अपनी नगरी में लाने के लिए उन्हें उकसा रहें हैं। लेकिन *बाबा के प्रेम का अतीन्द्रिय सुख उन्हें माया के हर प्रलोभन से मुक्त कर रहा है*। उन्हें आकर्षित करने के माया रावण के सभी उपाय फेल हो रहें हैं। ब्राह्मण बच्चो की विजय हो रही है और माया रावण की नगरी विध्वंस हो रही है। माया भी दासी बन उन बच्चों के आगे सरेन्डर हो चुकी है।

➺ _ ➺ बाबा अब मुस्कुराते हुए मेरी ओर देख रहे हैं जैसे आंखों ही आंखों में मुझसे पूछ रहे हैं, समझे बच्चे:- "माया और माया की गृहचारी क्या होती है"! अपना सिर हिलाते हुए मैं मीठी सी मुस्कुराहट के साथ बाबा को जवाब देता हूं, हां बाबा। मैं सब कुछ समझ गया। *माया की गृहचारी से बचने के लिए अब मुझे सदा आपके साथ रहना है, एक पल के लिए भी आपसे दूर नही होना*।

➳ _ ➳ बाबा को अपने साथ लिए अब मैं निराकारी आत्मा बन अपने ब्राह्मण स्वरूप में लौट रही हूँ। चलते, फिरते हर कर्म करते कम्बाइंड स्वरूप की स्मृति में रह अब मैं माया के हर वार का सामना सहज रीति कर रही हूं। *सच्चे बाप का सच्चा बच्चा बन बाबा के साथ अंदर बाहर सदा सच्चे हो कर रहने से अब मैं बाबा को कदम कदम पर अपने साथ अनुभव कर रही हूं*। बाबा की छत्रछाया सेफ्टी का किला बन माया के हर वार से मुझे बचा रही है।

————————————————————

∫∫ 8 ∫∫ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के वरदान पर आधारित...)

✺ *मैं अपने चेहरे और चलन से सत्यता की सभ्यता का अनुभव कराने वाली आत्मा हूँ।*
✺ *मैं महान आत्मा हूँ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

————————————————————

∫∫ 9 ∫∫ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के स्लोगन पर आधारित...)

✺ *मैं आत्मा सदैव नम्रता को अपना कवच बना लेती हूँ ।*
✺ *मैं आत्मा सदा सुरक्षित हूँ ।*
✺ *मैं नम्रचित्त आत्मा हूँ ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

————————————————————

∬ 10 ∬ अव्यक्त मिलन (Marks:-10)
(अव्यक्त मुरलियों पर आधारित...)

✺ अव्यक्त बापदादा-:

➢➢ _ ➢➢ कोई भी कार्य करते बाप की याद में लवलीन रहो। लवलीन आत्मा कर्म करते भी न्यारी रहेगी। *कर्मयोगी अर्थात् याद में रहते हुए कर्म करने वाला सदा कर्मबन्धन मुक्त रहता है। ऐसे अनुभव होगा जैसे काम नहीं कर रहे हैं लेकिन खेल कर रहे हैं। किसी भी प्रकार का बोझ वा थकावट महसूस नहीं होगी।* तो कर्मयोगी अर्थात् कर्म को खेल की रीति से न्यारे होकर करने वाला। ऐसे न्यारे बच्चे कर्मेन्द्रियों द्वारा कार्य करते बाप के प्यार में लवलीन रहने के कारण बन्धनमुक्त बन जाते हैं।

✺ *"ड्रिल :- याद में रह हर कर्म करते हुए कर्म को एक खेल बनाना"*

➢➢ _ ➢➢. दूर एकांत स्थान पर बैठकर *मैं आत्मा एक ऐसी आत्मा को देखती हूं... जो अपने सिर पर एक भारी सी गठरी लिए हुए चल रही है... वह अपने शरीर से और उस गठरी से अपने आपको इतना थका हुआ अनुभव कर रही है कि वह एक कदम भी सही तरह चल नहीं पा रही है...* उसे देख कर मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि मानो वह बहुत ही थकान से भरी हुई है... और एक तरफ मैं देखती हूं कि एक आत्मा अपने आनंद से चली जा रही है वह बहुत ही तेजी से और अपने ही धुन में चली जा रही है... जब मैं दूर बैठी उन दोनों आत्माओं को ध्यान से देखती हूं तो मुझे दोनों ही आत्माओं में अलग-अलग भाव दिखाई देता है...

➢➢ _ ➢➢ मैं उन आत्माओं के पास जाती हूं और जिस आत्मा ने अपने ऊपर एक भारी गठरी रखी हुई थी उससे पूछती हूं ? तुम इतनी थकान में और इस गठरी के बोझ से प्रभावित होकर कहां जा रही हो? तो वह आत्मा कहती है कि मैं अपने कर्म-क्षेत्र पर अपना कर्म कर रही हूं जिससे मुझे थकान का अनुभव हो रहा है... *मेरे कर्तव्य का बोझ और सेवा का बोझ मुझ पर इतना हो गया है

कि मैं चल भी नहीं पा रही हूं और कहती हूँ परंतु मैं कितना भी थकान का अनुभव करूँ मुझे चलते जाना है... मुझे सेवा करते रहनी है* और मैं उस आत्मा को उसी स्थान पर रुकने के लिए कहती हूं और वह आत्मा अपने गठरी को नीचे रखती है और बैठ जाती है...

➽ _ ➽ और मैं दूसरी आत्मा को जो मगन अवस्था में तेजी से चल रही थी उसे अपने पास बुलाती हूँ और पूछती हूं... तुम इतनी तेजी से और मगन अवस्था में कहां जा रहे हो ? तो वह आत्मा मुझे कहती है कि मैं परमात्मा की याद में अपना कर्तव्य और सेवा करती हुई जा रही हूं... फिर मैं उन दोनों आत्माओं को एक स्थान पर बैठा कर उनका अनुभव सुनकर उन्हें एहसास दिलाती हूं कि *अगर हम किसी भी सेवा को परमात्मा की याद में रहकर करते हैं तो हमें उस सेवा को करते समय कोई भी थकावट नहीं होगी... वह सेवा कब पूरी हो जाएगी हमें एहसास भी नहीं होगा और वह सेवा हम खेल खेल में ही पूर्ण कर देंगे...*

➽ _ ➽ इतना कहकर मैं आत्मा रॉकेट बनकर अंतरिक्ष में पहुंच जाती हूं... जहां पर एक ग्रह के ऊपर मैं बाबा को अपने सामने इमर्ज करती हूँ... यह नजारा देख कर मेरी आंखें बहुत ही सुख का अनुभव कर रही है... और बाबा मुझे कह रहे हैं, *बच्चे तुम्हे भी हर कर्म को परमात्मा की याद मे रहकर ही करना चाहिए... और हर कर्म को खेल समझकर करना चाहिए... जिससे तुम कब, कितना काम कर जाओगे तुम्हे अहसास भी नहीं होगा...* और साथ ही उन दोनों आत्माओं का उदाहरण भी देते हैं कि अगर हम हमारा सारा बोझ परमात्मा को दे देते हैं तो हमें उसकी याद में थकावट का अनुभव नहीं होगा...

➽ _ ➽ और बाबा की बातों को सुनकर मैं बाबा का धन्यवाद करती हूँ... और मन बुद्धि से रॉकेट में बैठकर वापिस मैं उसी स्थान पर आ जाती हूँ और उन दोनों आत्माओं को कहती हूँ... जो आत्मा गठरी उठाये थी उसे कहती हूँ, आप इस अपनी गठरी को एक खेल की प्रक्रिया समझते हुए उठाये और बाबा की याद में रहिये... जैसे *आप समझो की इस पोटली में बाबा के दिए हुए अनमोल खजाने है... जिसको स्वयं बाबा उठा रहे हैं आप तो सिर्फ निमित्त मात्र है... और साथ ही मैने कहा कि तुम इस खजानों की पोटली को लेकर भागते

हुए ये अनुभव करो की तुम्हें पुरुषार्थ की दौड़ में इन खजानों से नंबर वन आना है... वह आत्मा फिर तेजी से और याद में मगन होकर चलने लगती है...*

⊙_⊙ आप सभी बाबा के प्यारे प्यारे बच्चों से अनुरोध है की रात्रि में सोने से पहले बाबा को आज की मुरली से मिले चार्ट के हर पॉइंट के मार्क्स ज़रूर दें ।

♔ ॐ शांति ♔